

## डॉ. रॉबर्ट वानॉय, किंग्स, व्याख्यान 7

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

### सोलोमन - बैक टू इजिप्ट, हार्ट टर्न्स आइडोलैट्री

एफ. 1. एक दोष के साथ शांति

2. निर्णायक मोड़ - 1 राजा 9:26-10:25 3. मिस्र वापस - 1 राजा 10:26-29

हम अभी भी "एफ" के अंतर्गत हैं। हमने "पीस विद ए फ्लॉ", 1 किंग्स 9:10 से 2 और "द टर्निंग पॉइंट," 9:26-10:25 को देखा है। आइए "एफ" के अंतर्गत "3" पर चलते हैं। जिसे मैं "वापस मिस्र" कहूंगा।

ठीक है, अध्याय 10: 26-29 हमारा अगला भाग है। हम वहां पढ़ते हैं "सुलैमान ने रथ और घोड़े जमा किये; उसके पास चौदह सौ रथ और बारह हजार घोड़े थे, जिन्हें वह रथ वाले नगरों में और यरूशलेम में भी अपने पास रखता था। राजा ने यरूशलेम में चाँदी को पत्थरों के समान और देवदार को तलहटी में गूलर-अंजीर के वृक्षों के समान प्रचुर बना दिया। सुलैमान के घोड़े मिस्र और कुए से आयात किए गए थे - शाही व्यापारियों ने उन्हें कुए से खरीदा था। उन्होंने मिस्र से 600 शेकेल चाँदी में एक रथ और 150 शेकेल में एक घोड़ा आयात किया। उन्होंने उन्हें हितियों और अरामियों के राजाओं को भी निर्यात किया।

अब ऐसा लगता है कि यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि सुलैमान रथों और घोड़ों के व्यापार में एक बिचौलिया है। उन्होंने प्रति घोड़ा 150 शेकेल के हिसाब से घोड़े खरीदे, लेकिन मुझे लगता है कि यहां व्यापार व्यवस्था के अलावा और भी बहुत कुछ चल रहा है। सुलैमान का वास्तविक कार्य उस चीज़ से लाभ प्राप्त करना है जिसे आज आप हथियारों और आयुधों की अंतर्राष्ट्रीय बिक्री कह सकते हैं। ये सैन्य हथियार थे- उस समय के रथ आज के टैंक थे। वे सैन्य उपकरण थे. सुलैमान को शांति का राजा माना जाता था लेकिन वह रथों और घोड़ों के व्यापार में शामिल था। व्यवस्थाविवरण 17 में यह कहा गया है कि राजा को अपने लिए बड़ी संख्या में घोड़े प्राप्त नहीं करने चाहिए, या लोगों को उनमें से अधिक प्राप्त करने के लिए मिस्र लौटने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए। वह श्लोक 16 है: "एक राजा

को अपने लिए बड़ी संख्या में घोड़े नहीं खरीदने चाहिए या अपने लोगों को और अधिक पाने के लिए उन्हें मिस्र वापस नहीं भेजना चाहिए, क्योंकि प्रभु ने तुमसे कहा है, 'तुम्हें उस रास्ते से दोबारा वापस नहीं जाना है।'"

सुलैमान न केवल घोड़ों के इस व्यापार में शामिल है, बल्कि आप पद 26 में देखेंगे कि उसने अपने लिए घोड़े और रथ जमा किए; उसके पास 1400 रथ और 12,000 घोड़े थे। मुझे लगता है कि आप उसका तर्क समझ सकते हैं। इज़राइल के आसपास के पड़ोसी देशों के पास महत्वपूर्ण संख्या में रथ और घोड़े थे, और सुलैमान स्पष्ट रूप से चाहता था कि उसके पास पड़ोसी देशों के बराबर घोड़े हों। लेकिन मुझे लगता है कि आपको इसे बाइबिल के परिप्रेक्ष्य में रखना होगा। यदि आप निर्गमन के समय में वापस जाते हैं, तो आपको याद होगा कि मिस्रियों ने रथों और घोड़ों के साथ इज़राइल का पीछा किया था। इस्राएलियों के पास कुछ भी नहीं था, इसलिए वे निस्संदेह बहुत भयभीत थे। लेकिन हम जानते हैं कि क्या हुआ; इस तथ्य के बावजूद कि इस्राएली सख्त सैन्य दृष्टिकोण से असहाय थे, मिस्र की सेना नष्ट हो गई। प्रभु ने हस्तक्षेप किया। हमने पहले चर्चा की थी कि विजय के दौरान, इज़राइल उन सेनाओं के विरुद्ध आया था जिनके पास बड़ी संख्या में रथ और घोड़े थे।

यदि आप यहोशू 11 को देखते हैं, तो आप श्लोक 4 में राजाओं के इस गठबंधन के बारे में पढ़ते हैं, जिसका नेतृत्व हासोर के राजा याबीन ने किया था, जो अपने सभी सैनिकों और बड़ी संख्या में घोड़ों और रथों, एक विशाल सेना के साथ यहोशू के खिलाफ आया था। समुद्र तट पर रेत. परन्तु फिर भी, यहोवा ने उन राजाओं को इस्राएल के हाथ में कर दिया, यद्यपि इस्राएल के पास कोई रथ और घोड़े नहीं थे। यदि आप अध्याय में बाद में पढ़ते हैं, कि इस्राएलियों ने अपने लिए क्या किया, तो वह पद 14 है: "इन नगरों की सारी लूट, पशुधन, और सारी जनता को उन्होंने तब तक तलवार से मार डाला जब तक कि उन्होंने उन्हें पूरी तरह से नष्ट नहीं कर दिया।" मुझे लगता है कि मैंने आपको पहले बताया था, इस अध्याय के संदर्भ में, उस अवसर पर प्रभु ने यहोशू को निर्देश दिया था, श्लोक 6: "उनसे मत डरो क्योंकि कल इसी समय तक मैं उन्हें इस्राएल को सौंप दूंगा। तू उनके घोड़ों की हड्डियाँ काट देना, और उनके रथ जला देना।" यह सीधा आदेश है। यहोवा नहीं चाहता था कि उस समय

इस्राएली इन रथों और इन घोड़ों को ले लें और उन्हें अपने सैन्य बल में एकीकृत कर लें। अब, मानवीय मानकों के अनुसार, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि यह मूर्खतापूर्ण है, लेकिन प्रभु ने यही आदेश दिया है।

भगवान पर भरोसा करना असली मुद्दा है: कमजोरी में ताकत

मुझे ऐसा लगता है कि इसके पीछे यह चिंता है कि इज़राइल सैन्य बल और अपनी ताकत और अपनी ताकत के बजाय भगवान पर भरोसा करता है। यदि इज़राइल अपने चारों ओर के सभी लोगों की सेनाओं के बराबर सेना बनाता है, तो अनिवार्य रूप से एक बदलाव होगा और वे अपनी सुरक्षा के लिए भगवान के बजाय सैन्य ताकत पर भरोसा करेंगे। और मुझे लगता है कि मुद्दा यह है कि प्रभु नहीं चाहते थे कि वे ऐसा करें। वह चाहते थे कि लोग उन पर विशेष भरोसा करें। इसलिए इज़राइल को कोई सैन्य प्रतिष्ठान नहीं बनाना था। अपने आस-पास के लोगों की तुलना में, उन्हें कमजोर रहना था, ठीक इसलिए ताकि वे भगवान पर भरोसा रख सकें।

फिर से, मुझे लगता है कि उस विचार में आपके पास एक सिद्धांत है जो पूरे पवित्रशास्त्र में चलता है। आप इसे वहां इस पुराने नियम के संदर्भ में पाते हैं, लेकिन पॉल ने 2 कुरिन्थियों 12:10 में उसी सिद्धांत के बारे में बात की है। वह कहते हैं, "जब मैं कमजोर होता हूं, तब मैं मजबूत होता हूं।" और मुझे लगता है कि मुद्दा यह है कि, जब हमारे पास ऐसा कुछ नहीं होता जिस पर हम भरोसा कर सकें और भगवान के अलावा किसी और पर भरोसा कर सकें, तो ठीक उसी बिंदु पर भगवान की शक्ति स्पष्ट हो जाती है। यह तब होता है जब हम उस तरह की स्थिति में होते हैं कि हम अपने स्वयं के संसाधनों, चाहे जो भी हो, के बजाय ईश्वर के प्रेम और अनुग्रह पर निर्भर रहते हैं। लेकिन जैसे ही हम अपने स्वयं के संसाधनों को देखते हैं और उन पर अपनी निर्भरता डालते हैं, तब भगवान की शक्ति छिपी हो जाती है और हमारे लिए महत्वहीन हो जाती है। तो वह सिद्धांत बहुत सारे रूप धारण करता है, बहुत सारी विविधताएँ लेता है। आप पवित्रशास्त्र में पाते हैं कि ईश्वर आमतौर पर उन लोगों का उपयोग करना चुनता है जो असहाय और कमजोर हैं, और ऐसा वह उन लोगों को भ्रमित करने के लिए करता है जो मजबूत और शक्तिशाली हैं।

लेकिन यहां संदर्भ पर वापस आने के लिए, इज़राइल को अन्य देशों से अलग होना था। उसे कोई सैन्य बल नहीं बनाना था; उसे अपनी सुरक्षा के लिए प्रभु पर पूर्ण विश्वास के रिश्ते में रहना था, और प्रभु ने उस सुरक्षा की गारंटी दी जब तक वे आज्ञाकारी और वफादार थे।

धर्मग्रंथों में घोड़े और रथ, ऐसा लगता है कि इज़राइल ने लंबे समय तक उस आदेश को ध्यान में रखा। यदि आप न्यायाधीशों के अध्याय 4 को देखें, तो आपको रथों का एक और संदर्भ मिलता है। न्यायियों 4:3, कनानी सीसरा इस्राएल के विरुद्ध आया, और आप श्लोक 3 में पढ़ते हैं: “उसके पास 900 लोहे के रथ थे और उसने 20 वर्षों तक इस्राएलियों पर क्रूरता से अत्याचार किया। और उन्होंने सहायता के लिये यहोवा की दोहाई दी।”

इस्राएल को सीसरा के विरुद्ध जाना पड़ा जिसके पास केवल पैदल सैनिकों के साथ 900 रथ थे। फिर भी प्रभु पद 7 में कहते हैं, “मैं याबीन की सेना के प्रधान सीसरा को उसके रथों और सेना समेत कीशोन नदी पर ले जाऊँगा और तुम्हारे हाथ में कर दूँगा।” यदि आप कथा पढ़ते हैं, तो वास्तव में यही होता है। और आप श्लोक 14 और निम्नलिखित में पढ़ते हैं: “दबोरा ने बराक से कहा ‘जाओ!’ यही वह दिन है जब यहोवा ने सीसरा को तुम्हारे हाथ में कर दिया है। क्या वह प्रभु तुम से आगे नहीं निकल गया?’ इसलिए बराक 10,000 पुरुषों के साथ ताबोर पर्वत पर गया। बराक के आगे बढ़ने पर, यहोवा ने सीसरा और उसके सभी रथों और सेना को तलवार से मार डाला, और सीसरा अपना रथ छोड़कर पैदल भाग गया। परन्तु बराक ने हरोशेत हागगोयीम तक रथों और सेना का पीछा किया। सीसरा की सारी सेना तलवार से मारी गई; एक भी आदमी नहीं बचा।”

यदि आप थोड़ा और आगे बढ़ें जब राजशाही स्थापित हो गई, तो इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है कि शाऊल के पास कोई रथ था। दाऊद का सामना घोड़ों और रथों से हुआ। आपने 2 शमूएल 8:3, 4 में पढ़ा, दाऊद ने सोबा के राजा रहोब के पुत्र हददेजेर से उस समय युद्ध किया जब वह परात नदी के किनारे अपना नियंत्रण पुनः स्थापित करने गया था। दाऊद ने उसके एक हजार रथों, 700 सारथियों, 20,000 पैदल सैनिकों को पकड़ लिया।

उसने रथ के सौ घोड़ों को छोड़कर बाकी सभी घोड़ों की टांगें काट दीं। अतः दाऊद के पास भी कोई तुलनीय प्रतिबल नहीं था, परन्तु उसने यहोवा पर भरोसा रखा, और यहोवा ने उसे विजय दिलाई। फिर, अधिकांशतः, उसने उन सभी रथों और घोड़ों को नष्ट कर दिया। उसने उनमें से सौ को बचाया।

भजन 20 हमें इस बारे में कुछ बताता है कि दाऊद ने इन चीजों को किस प्रकार देखा। भजन 20 में लोग राजा को संबोधित करते हैं और विजय के लिए राजा की प्रार्थना में अपनी प्रार्थनाएँ जोड़ते हैं। और आपने पद 7 में पढ़ा जहां राजा बोल रहा है, जो निस्संदेह दाऊद है, वह कहता है: “कुछ लोग रथों पर भरोसा रखते हैं, कुछ घोड़ों पर, लेकिन हम अपने परमेश्वर यहोवा के नाम पर भरोसा रखते हैं। उन्हें पूरी तरह से घुटनों पर ला दिया जाता है, लेकिन हम उठते हैं और मजबूती से खड़े रहते हैं। इसलिए दाऊद ने उन कुछ घोड़ों को छोड़कर बाकी सभी घोड़ों की टांगें काट दीं और, संभवतः, उसने रथों को नष्ट कर दिया, जैसा कि यहोशू ने किया था।

इसलिए ऐसा प्रतीत नहीं होगा कि डेविड घोड़ों की संख्या बढ़ाने के संबंध में राजा के उस व्यवस्थाविवरण कानून के साथ टकराव में आया था। उसकी ताकत आसपास के देशों की तुलना में कुछ भी नहीं थी, लेकिन यहां चीजें बदल गई हैं। सुलैमान के पास 1400 रथ और 12,000 घोड़े थे। उस समय की सेनाओं के बारे में जो जानकारी है, उसके आधार पर यह वास्तव में आसपास के देशों से तुलनीय है। इसलिए मुझे लगता है कि सुलैमान के लिए यह सिद्धांत अब "जब मैं कमजोर हूं, तब मैं मजबूत हूं" नहीं है। वह एक अलग सिद्धांत पर काम कर रहा है, और सिद्धांत यह है कि अगर मेरे पास पर्याप्त बड़ी सैन्य शक्ति है, तो मैं मजबूत हूं। इसलिए मुझे लगता है कि सुलैमान एक सांसारिक राजा की विशेषताओं में से एक को अपनाता है। पुनः, यह व्यवहार एक सच्चे संविदाकारी राजा के आचरण के विपरीत है।

सुलैमान यहाँ एक पैटर्न को दर्शाता है जो उन सभी राजाओं के साथ जारी है, जो अधिकांशतः उसका अनुसरण करते हैं। इसलिए यदि आप यशायाह अध्याय 2 को देखें, तो यशायाह श्लोक 7 और निम्नलिखित में कहता है: “उनकी भूमि चाँदी और सोने से भरपूर है;

उनके खजाने का कोई अंत नहीं है. उनका देश घोड़ों से भरा है; उनके रथों का कोई अंत नहीं है. उनका देश मूर्तियों से भरा है; वे अपने हाथों के कामों, और अपनी अंगुलियों के बनाए हुए कामों के आगे दण्डवत् करते हैं। इस प्रकार मनुष्य को नीचा और मनुष्यजाति को नीचा किया जाएगा; उन्हें माफ मत करो।” और वहाँ फिर से यह दिलचस्प है कि आप देखें कि यशायाह ने वहाँ क्या उल्लेख किया है: चाँदी और सोना, घोड़े और रथ, और मूर्तियाँ। ये वही चीज़ें हैं जो व्यवस्थाविवरण 17 में राजा के उस कानून में प्रतिबिंबित होती हैं जो ऐसी चीज़ें थीं जिनसे इज़राइल को दूर हो जाना चाहिए। लेकिन सुलैमान ने धन बढ़ाने, एक मजबूत सैन्य बल स्थापित करने की कोशिश की और अंततः वह भी मूर्तियों की ओर मुड़ गया।

जी. निष्कर्ष - 1 राजा 11

1. सुलैमान का परमेश्वर से विमुख होना: हृदय मुड़ गया

ठीक है, चलिए "जी" पर चलते हैं, जो "निष्कर्ष" है; वह अध्याय 11 है। मेरे पास दो उप-बिंदु हैं जो आपकी शीट पर हैं। एक है सुलैमान का परमेश्वर से विमुख होना, श्लोक 1 से 13। यह देखते हुए कि कैसे सुलैमान ने व्यवस्थाविवरण 17 में राजा के कानून में दो निषेधों का उल्लंघन किया - घोड़े बढ़ाना और धन बढ़ाना - और जब आप अध्याय 11 पर आते हैं, तो यह बिल्कुल स्पष्ट है तीसरे का भी उल्लंघन किया--पत्नियाँ बढ़ाने का नहीं। तो यदि आप पढ़ते हैं, “सुलैमान फिरौन की बेटी के अलावा कई विदेशी महिलाओं से प्यार करता था: मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, सीदोनियन और हिती। ये उन राष्ट्रों में से थे जिनके विषय में यहोवा ने इस्राएलियों से कहा था, 'तुम्हें उनके साथ विवाह नहीं करना चाहिए क्योंकि वे निश्चय ही तुम्हारे हृदयों को अपने देवताओं की ओर फेर देंगे।' फिर भी, सुलैमान ने प्रेम से उन्हें थामे रखा। उसकी कुलीन कुल की 700 पत्नियाँ, 300 रखैलें थीं और उसकी पत्नियों ने उसे भटका दिया था।”

इसे हल्के शब्दों में कहें तो यह एक बड़ा हरम है। लेकिन फिर, आप जो देख रहे हैं वह यह है कि उसका शासन अन्य प्राचीन निकट पूर्वी न्यायालयों के पैटर्न और प्रथाओं के

अनुरूप है। ऐसा लगता है कि अधिकांशतः ये महिलाएँ विदेशी महिलाएँ थीं, संभवतः उनमें से कई को राजनीतिक गठबंधन के सिलसिले में सुलैमान के हरम में लाया गया था। लेकिन ऐसा लगता है कि वहाँ कनानी भी थे क्योंकि यह कहता है, "वे उन राष्ट्रों से थे जिनके बारे में प्रभु ने इस्राएलियों से कहा था 'तुम्हें अंतर्जातीय विवाह नहीं करना चाहिए।'" यदि आप पेंटाटेच पर वापस जाते हैं, तो वे कनानी थे। उन्होंने उसका उल्लंघन किया। और पद 2बी में यह कहा गया है, "सुलैमान ने प्रेम से उन्हें थामे रखा।" तो ऐसा लगता है कि यहां राजनीतिक या आर्थिक व्यवस्था से कहीं अधिक कुछ है। यह आश्चर्यजनक है कि श्लोक 2 से 4 में कितनी बार "हृदय" शब्द का प्रयोग किया गया है - यह पाँच बार है। प्रभु कहते हैं, "वे निश्चय तुम्हारे मन को अपने देवताओं की ओर फेर देंगे," और पद 3: "उसकी सात सौ पत्नियाँ और तीन सौ रखेलियाँ थीं, और उसकी पत्नियाँ उसे भटकाती थीं। जैसे-जैसे सुलैमान बूढ़ा होता गया, उसकी पत्नियों ने उसका मन पराये देवताओं की ओर मोड़ दिया, और उसका मन अपने पिता दाऊद की भाँति अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति पूरी तरह समर्पित नहीं रहा।" पद 3 के अंत में वह अभिव्यक्ति, "उसकी पत्नियों ने उसे भटका दिया," हिब्रू में इसका शाब्दिक अर्थ है "उसकी पत्नियों ने उसका मन भटका दिया।" यह एनआईवी अनुवाद में सामने नहीं आता है। नये राजा जेम्स ने, "अपना हृदय फेर लिया।" लेकिन आप उन कुछ छंदों में पाँच बार "हृदय" देखते हैं।

हृदय हमारे अस्तित्व का केंद्र या मूल है। नीतिवचन 4:23 कहता है, "सबसे बढ़कर अपने हृदय की रक्षा कर, क्योंकि वही जीवन का सोता है।" दूसरे शब्दों में, जो दिल में तय किया जाता है वह जीवन में काम आता है। जब किसी व्यक्ति का दिल सही होता है, तो जीवन उसे प्रतिबिंबित करेगा। लेकिन जब कोई बात दिल को भटका दे तो उसका असर जिंदगी पर भी पड़ता है ; और मुझे लगता है कि सुलैमान के साथ भी यही हुआ था। असफलता की शुरुआत दिल से हुई। दूसरे शब्दों में, ये पत्नियाँ उसकी सोच और उसके आंतरिक व्यक्तित्व को प्रभावित करने लगीं। उनके प्रभाव में, उसने उनके बुतपरस्त देवताओं का अनुसरण करना और उनके लिए वेदियाँ बनाना शुरू कर दिया।

जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते हैं, और आप पद 5 पढ़ते हैं, "उसने सीदोनियों की देवी

अशतोरेत और अम्मोनियों के घृणित देवता मोलेक का अनुसरण किया। इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया; उसने अपने पिता दाऊद की तरह पूरी तरह से यहोवा का अनुसरण नहीं किया।” उसने अपनी सभी विदेशी पत्नियों के साथ भी ऐसा ही किया, जो अपने देवताओं को धूप जलाती और बलिदान चढ़ाती थीं।” इसलिए उसने अन्यजातियों के देवताओं के लिए इन वेदियों का निर्माण शुरू किया। आपने स्पष्ट रूप से नहीं पढ़ा कि सुलैमान स्वयं उन वेदियों पर बलिदान लाया था, लेकिन मुझे लगता है कि उसने जो किया, वह काफी गंभीर था। उसने यरूशलेम के पूर्व में, मंदिर के आसपास अन्यजातियों की पूजा को एक वैध स्थान दिया, और यह वाचा की आज्ञाओं का सीधा उल्लंघन है जिसमें कहा गया था कि भूमि में सभी मूर्तिपूजक वेदियों को नष्ट कर दिया जाना चाहिए। वह उन्हें नष्ट करने के बजाय उनके निर्माण का प्रावधान करता है।

उस समय आप देखते हैं कि सुलैमान के जीवन में उसके शुरुआती दिनों की तुलना में आमूल-चूल परिवर्तन आ गया है। श्लोक 9 कहता है, "यहोवा सुलैमान पर क्रोधित हुआ क्योंकि उसका मन इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से फिर गया था, जिसने उसे दो बार दर्शन दिया था।" उसका मन इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से फिर गया था।

पद 4 कहता है, "उसका हृदय अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति पूरी तरह समर्पित नहीं था, जैसा कि उसके पिता दाऊद का हृदय था।" यह दिलचस्प है कि वहाँ हिब्रू शब्द, "उसका दिल पूरी तरह से समर्पित नहीं था," आप में से उन लोगों के लिए जिनके पास कुछ हिब्रू है, यह *शालेम* है, यह "शालोम" के समान मूल है, और सोलोमन के नाम के समान मूल है। मूल मूल शब्द *शालेम* शब्द है। ठीक है, मुझे नहीं पता कि यह जानबूझकर किया गया है, लेकिन मुझे लगता है कि मुद्दा पूर्ण, सुदृढ़ या संपूर्ण, सामंजस्यपूर्ण होने का मूल साधन है। इसमें कलह के अभाव का विचार है।

निश्चित रूप से, सुलैमान के राज्य की शुरुआत में, उसके राज्य में संघर्ष की अनुपस्थिति, पूर्णता, सुदृढ़ता, पूर्णता के अर्थ में शांति प्रतिबिंबित होती थी। तो आप कह सकते हैं कि सुलैमान का नाम, जो उस मूल शब्द से संबंधित है, पूर्णता और संघर्ष की अनुपस्थिति की स्थिति लाने के उसके मिशन या उसके कार्य का प्रतिनिधित्व करता है। उसे



इस तरह से शासन करना था जिससे स्वस्थ परिस्थितियाँ, शांति का राज्य बने; परन्तु अब उसका मन स्वस्थ नहीं रहा, *शालेम*; यह पूरी तरह से भगवान के प्रति समर्पित नहीं है, इसलिए उसके दिल में सद्भाव और शांति गायब हो गई है। और मैं सोचता हूँ कि वहाँ, जब वह विभाजन उसके हृदय में प्रवेश करता है, तो वह स्वयं ही सक्रिय हो जाता है और राज्य में भी विभाजन और कलह लाता है।

परमेश्वर की चेतावनी - 1 राजा 9:4      फिर, यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो रातोंरात घटित होती है, यह अचानक नहीं घटित हुई, यह एक प्रक्रिया थी। एक बात दूसरे का नेतृत्व करती है। प्रभु ने सुलैमान को दर्शन दिये थे (हम अध्याय 9 में उस अंश को देख सकते हैं) और उसे चेतावनी दी थी। सूचना 9:4: "यदि तुम हृदय की खराई और सीधार्ई के साथ सच्चाई से मेरे सामने चलो, तो जैसा मैंने दाऊद से वादा किया था, मैं तुम्हारा सिंहासन सदैव के लिए स्थिर रखूँगा; परन्तु यदि तू फिरे, तो मैं इस्राएल को देश में से नाश करूँगा," इत्यादि। उसे इसके बारे में चेतावनी दी गई थी, लेकिन उसने अनसुना कर दिया।

ताकि जब आप अध्याय 11 पर वापस जाएं और श्लोक 11 को देखें: "प्रभु ने सुलैमान से कहा, 'क्योंकि यह तुम्हारा रवैया है और तुमने मेरी वाचा और मेरे आदेशों का पालन नहीं किया है जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मैं निश्चित रूप से राज्य को नष्ट कर दूँगा अपने से दूर करो और इसे अपने किसी अधीनस्थ को दे दो।' यहोवा ने कहा, 'तुम ने मेरी वाचा और मेरे नियमों का पालन नहीं किया।' यह बिल्कुल स्पष्ट है। सुलैमान एक सच्चा संविदाकारी राजा बनने से चूक गया। आप देखते हैं कि इतनी सारी महिलाओं से शादी करने के बाद, उसका दिल भटक गया था, और फिर उसने बुतपरस्त देवताओं की पूजा की व्यवस्था की।

2. सुलैमान के शत्रु - 1 राजा 11:14-25      यह हमें इस निष्कर्ष के अंतर्गत संख्या "2" पर लाता है, और वह है "सुलैमान के शत्रु, श्लोक 14 से 25, अध्याय 11।" इस भाग में आपको सुलैमान के प्रति प्रभु की अप्रसन्नता का संकेत मिलता है, और वह संकेत इन विरोधियों की गतिविधियों में है। पहला एदोमी हृदय है, पद 14: "तब यहोवा ने एदोम के वंश

में से एक शत्रु अर्थात् एदोमी हदद को सुलैमान के विरुद्ध खड़ा किया। " हमने इस आदमी के बारे में पढ़ा है कि दाऊद के समय में, वह एदोम से भाग गया था और मिस्र में शरण ली थी और वास्तव में, मिस्र के फिरौन के परिवार में शादी कर ली थी। इस समय वह मिस्र से एदोम लौट आया है और वह इस्राएल से बदला लेना चाहता है क्योंकि दाऊद ने एदोमियों को अपने अधीन कर लिया था। तो फिर, वह एक विरोधी था, जिसे प्रभु ने अपनी नाराजगी के संकेत के रूप में सुलैमान के खिलाफ खड़ा किया था।

दूसरा एलियादा का पुत्र रेजोन है, जिसके बारे में आपने 1 राजा 11, पद 23 में पढ़ा है: "और परमेश्वर ने सुलैमान के विरुद्ध एक और शत्रु को खड़ा किया, अर्थात् एलीयादा का पुत्र रेजोन, जो अपने स्वामी, सोबा के राजा हददेजेर के पास से भाग गया था।" और उसने दमिश्क पर अधिकार कर लिया, और पद 25 में आपने पढ़ा कि जब तक सुलैमान जीवित रहा, तब तक रेजोन इस्राएल का शत्रु था। अब दमिश्क, निस्संदेह, उत्तर में है। एदोम एक प्रकार से दक्षिण-पूर्व की ओर है। तो दो मोर्चों पर, आप कह सकते हैं, सुलैमान के विरोधी थे। दमिश्क, जहां रेजोन था, पूरे इतिहास में इज़राइल का प्रतिद्वंद्वी बना रहा, यह हमेशा संघर्ष का स्रोत रहा। आज भी वैसा ही है. दमिश्क और इज़राइल अभी भी मतभेद में हैं। अब, मुझे लगता है कि सुलैमान के समय में उन दो विरोधियों का उदय यह दर्शाता है कि इज़राइल में सब कुछ ठीक नहीं है।

सिद्धांत यह है कि जब सुलैमान मूर्तियों के लिए जगह बनाता है, तो आप कह सकते हैं कि प्रभु इस्राएल के शत्रुओं के लिए जगह बनाते हैं ताकि वे इस्राएल पर दबाव बनाना शुरू कर सकें। वह उनका उपयोग अपने ही लोगों के विरुद्ध करता है। आप इसे पूरे इज़राइल के इतिहास में लगातार पाते हैं जहां प्रभु अपने ही लोगों पर न्याय लाने के लिए एक अन्यजाति राष्ट्र का उपयोग करेंगे। बाद में वह बेबीलोनियों और अशूरियों का उपयोग करता है।

मसीहाई आदर्श राजा का उदय ठीक है, मुझे लगता है कि हम उस बिंदु पर रुक जाएंगे। यह हमें सुलैमान के राज्य के अंत तक लाता है। मैंने सुलैमान पर काफी समय

बिताया है क्योंकि मुझे लगता है कि सुलैमान का राज्य वास्तव में राजाओं की किताबों में सभी अनुयायियों के लिए मंच तैयार करता है। आप सुलैमान से देखते हैं कि भले ही भगवान ने दाऊद को एक शाश्वत राजवंश का वादा दिया था, और सुलैमान के लिए बड़ी उम्मीदें थीं, कि सुलैमान उस वाचा राजा के आदर्श को पूरा करने में असमर्थ था और उसके राज्य में खामियां थीं। वे चीज़ें अधिक स्पष्ट और अधिक गंभीर हो जाएंगी, और यह लगभग अपरिहार्य है, आप कह सकते हैं, कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के वाचा संबंधी निर्णय साकार होने जा रहे हैं। फिर जैसे ही वह प्रवृत्ति शुरू होती है, यह उस संदर्भ में होता है कि सच्चे वाचा राजा का मसीहाई आदर्श उठता है, विशेष रूप से भविष्यवक्ताओं यशायाह और यिर्मयाह और अन्य भविष्यवक्ताओं के बीच। वे इज़राइल को इन मानवीय, सांसारिक शासकों की ओर इतना ध्यान न देने के लिए प्रेरित करते हैं, बल्कि अंततः उस समय की ओर देखने के लिए प्रेरित करते हैं जिसमें भगवान स्वयं आएंगे और डेविड के पुत्र के रूप में डेविड के सिंहासन पर बैठेंगे, और उस राज्य की स्थापना करेंगे।

ठीक है, चलो यहीं रुकें। हम अगले सप्ताह रोमन II पर जाएंगे, और मुझे उम्मीद है कि हम अगले सप्ताह ओमरी और अहाब के राजवंश तक पहुंच सकते हैं, लेकिन हमें देखना होगा कि यह कैसे होता है।

कथरीन एडमिक द्वारा प्रतिलेखित  
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित  
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन  
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया